Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 21, Issue No. 5, July-2024, ISSN 2230-7540

https://doi.org/10.29070/a9bn2t22

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका का मूल्यांकन

डॉ. वन्दना शर्मा*

असि. प्रोफेसर, इतिहास, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फतेहाबाद, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Email: naveens7783@gmail.com

सारांश - *भारत को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता एक लंबे और कठिन संघर्ष के बाद मिली। इस संघर्ष में अनगिनत भारतीयों ने अपने प्राणों की आहुति दी और देश में व्यापक स्तर पर संपत्ति का विनाश हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के सात दशकों से अधिक समय बाद भी, स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों को केवल स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, और गांधी जयंती जैसे अवसरों पर ही याद किया जाता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं और पत्रकारिता ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस शोध पत्र में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और जनसंचार माध्यमों के योगदान को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। विदेशी सरकार द्वारा लगाए गए कठोर नियमों और प्रतिबंधों के बावजूद, स्वतंत्रता सेनानियों ने राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं और पत्रकारिता का उपयोग एक प्रभावशाली हथियार के रूप में किया, जिससे ब्रिटिश शासन की नींव हिल गई। इस शोध में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पत्र-पत्रिकाओं और जनसंचार माध्यमों की स्थिति का SWOT विश्लेषण भी किया गया है। उस समय देश में व्याप्त सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को राष्ट्रीय पत्रकारिता के माध्यम से उजागर करने और उनका समाधान ढूंढने का प्रयास किया गया। स्वतंत्रता पूर्व युग में राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं ने भारतीय जनमानस को एक नई दिशा दी और उनके गैर-व्यावसायिक पहलुओं का भी इस अध्ययन में विश्लेषण किया गया है।*

मूल शब्द - भारत, स्वतंत्रता, राष्ट्रीय पत्रकारिता, जनसंचार माध्यम, स्वतंत्रता आंदोलन

----------X----------

1. प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, अपने आप में एक महाकाव्यात्मक संघर्ष था, जिसने न केवल भारत को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के चंगुल से मुक्त कराया, बल्कि वैश्विक स्तर पर स्वतंत्रता आंदोलनों को प्रेरित किया। इस महान संघर्ष की सफलता में अनेक कारकों ने योगदान दिया, जिनमें से पत्रकारिता और पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय पत्रकारिता ने न केवल समाचार और विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम बनकर, बल्कि स्वतंत्रता की भावना को प्रज्वलित करने और राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में एक सशक्त साधन के रूप में कार्य किया। इन पत्र-पत्रिकाओं ने भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट करने, ब्रिटिश साम्राज्य के दमनकारी नीतियों का विरोध करने और स्वतंत्रता के विचार को जन-जन तक पहुंचाने में एक प्रमुख भूमिका निभाई।

1870 के दशक में, भारतीय प्रेस ने देश भर में अपने पंख फैलाने शुरू किए। 1870 से 1918 के बीच, अनेक शक्तिशाली समाचार पत्र उभरकर सामने आए, जो प्रतिष्ठित और निडर पत्रकारों के नेतृत्व में कार्यरत थे। इन वर्षों के दौरान प्रेस ने मुख्य राजनीतिक कार्यों को पूरा करने का प्रमुख साधन बनकर उभरी। यहाँ तक कि राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिकांश कार्य भी इन वर्षों में प्रेस के माध्यम से ही संपन्न हुआ। भारतीय पत्रकारिता को देश के कुछ महानतम पुरुषों द्वारा पोषित किया गया– स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, बौद्धिक विचारक, और

www.ignited.in

साहित्यकार, जिन्होंने इसकी विकास यात्रा में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दिया। इसलिए, भारतीय पत्रकारिता का इतिहास राष्ट्रीय चेतना के विकास और स्वतंत्रता संग्राम की प्रगति के साथ अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है।

भारतीय पत्रकारों ने लंदन स्थित समाजवादी और आयरिश समाचार पत्रों से साम्राज्यवाद-विरोधी अंश प्रकाशित करने का प्रयास किया। उन्होंने ब्रिटिश नागरिकों के रैडिकल विचारों को भारतीय जनता तक पहुँचाने के लिए विभिन्न युक्तियों का सहारा लिया, ताकि वे धारा 124ए के प्रावधानों से बाहर रह सकें। भारतीय (ब्रिटिश) सरकार भारतीयों के खिलाफ कार्रवाई करने में तब तक भेदभाव नहीं कर सकती थी, जब तक कि वह दोषी ब्रिटिश नागरिकों को भी दंडित न करे। इस प्रकार, भारतीय प्रेस ने अपनी सूझबूझ और साहस के साथ स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसने न केवल राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया, बल्कि स्वतंत्रता की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिन्होंने समाज में जागरूकता फैलाने के साथ-साथ लोगों को स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। इन माध्यमों ने जनता के बीच राष्ट्रीयता की भावना को प्रबल किया और उन्हें संगठित होकर स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। ब्रिटिश शासन के कठोर सेंसरशिप कानूनों और दमनकारी नीतियों के बावजूद, स्वतंत्रता सेनानियों ने पत्रकारिता को एक प्रभावी हथियार के रूप में प्रयोग किया। पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से उन्होंने ब्रिटिश सरकार की नीतियों की आलोचना की, समाज के समक्ष सच्चाई को उजागर किया और लोगों को स्वतंत्रता संग्राम की आवश्यकता के प्रति जागरूक किया।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पत्र-पत्रिकाओं ने भारतीय समाज में सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को भी उजागर किया। उन्होंने न केवल ब्रिटिश शासन के दमनकारी नीतियों की आलोचना की, बल्कि समाज में व्याप्त असमानता, गरीबी, और अन्य सामाजिक समस्याओं को भी सामने लाया। इन पत्र-पत्रिकाओं ने राष्ट्रीय एकता और स्वाभिमान को प्रोत्साहित किया, जिससे भारतीय समाज में एक नई जागरूकता और साहस का संचार हुआ। इसके अतिरिक्त, स्वतंत्रता पूर्व युग में राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं ने अपने गैर-व्यावसायिक स्वरूप में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने निस्वार्थ भाव से समाज के हित में कार्य किया और स्वतंत्रता संग्राम की सफलता में अहम भूमिका निभाई।

इस अध्ययन के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका का गहन मूल्यांकन किया जाएगा। इसमें उनके योगदान, प्रभाव, और समाज में हुए परिवर्तन का विश्लेषण किया जाएगा। यह अध्ययन हमें यह समझने में मदद करेगा कि कैसे राष्ट्रीय पत्रकारिता ने स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी और भारतीय समाज में स्वतंत्रता की ललक को प्रबल किया। भारतीय पत्रकारिता के इस महत्वपूर्ण योगदान को याद करना और उसका विश्लेषण करना, न केवल इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक है।

1.1 अध्ययन की आवश्यकता

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में पत्र-पत्रिकाओं और पत्रकारिता की भूमिका को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये माध्यम न केवल सूचना के प्रसार के साधन थे, बल्कि उन्होंने स्वतंत्रता की भावना को जागरित करने और राष्ट्रीय चेतना को प्रबल करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, जब ब्रिटिश शासन ने कठोर सेंसरशिप और दमनकारी नीतियाँ लागू कीं, तब भी भारतीय पत्रकारिता ने अपनी आवाज को बुलंद रखा और स्वतंत्रता सेनानियों के लिए एक शक्तिशाली हथियार के रूप में कार्य किया। इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि यह पत्रकारिता के ऐतिहासिक योगदान को न केवल स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में बल्कि भारतीय समाज और राजनीति के दीर्घकालिक विकास के संदर्भ में भी समझने का प्रयास करता है।

पत्र-पत्रिकाओं ने उस समय की सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक परिस्थितियों को उजागर किया, जिससे भारतीय समाज में जागरूकता और एकता की भावना का प्रसार हुआ। इसके अलावा, यह अध्ययन इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि कैसे भारतीय पत्रकारों ने ब्रिटिश शासन के दमनकारी कानूनों के बावजूद अपने मिशन को जारी रखा और स्वतंत्रता की लहर को पूरे देश में फैलाया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पत्रकारिता की भूमिका का अध्ययन करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह हमें न केवल उस समय के पत्रकारों की कठिनाइयों और चुनौतियों को समझने में मदद करता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि उन्होंने किस प्रकार से राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता के विचार को प्रबल किया।

www.ignited.in

इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन वर्तमान समय में भी महत्वपूर्ण है, जब प्रेस और मीडिया को नई चुनौतियों और अवसरों का सामना करना पड़ रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पत्रकारिता की भूमिका का मूल्यांकन वर्तमान मीडिया परिदृश्य में एक नैतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह अध्ययन पत्रकारिता के उस आदर्श को सामने लाता है, जो अपने समय की कठिनाइयों के बावजूद समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है। इसलिए, इस अध्ययन की आवश्यकता केवल इतिहास को समझने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य की पत्रकारिता के लिए भी प्रेरणा और मार्गदर्शन का स्रोत है।

1.2 अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन करें कि राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में किस प्रकार मदद की।
2. राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं के लाभों का पता लगाएँ।
3. स्वतंत्रता-पूर्व समय में जनसंचार माध्यमों का गैर-व्यावसायीकरण सुनिश्चित करें।
4. स्वतंत्रता-पूर्व समय में ब्रिटिश सरकार द्वारा जनसंचार माध्यमों पर लगाए गए प्रतिबंधों को जानें।

यह अध्ययन यह पता लगाने के लिए किया गया है कि राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं ने भारतीयों को स्वशासन के लिए किस प्रकार मदद की और प्रेरित किया। देश के नेता और समाज सुधारक जैसे - राजा राम मोहन राय, सुभाष चंद्र बोस, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, पंडित नेहरू आदि ने देशवासियों को विदेशी सरकार द्वारा किए गए अत्याचारों और अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया। भारत जैसे ब्रिटिश उपनिवेशों में मीडिया मूल निवासियों के लिए एक मजबूत हथियार था।

भारतीय मीडिया पर, विशेष रूप से भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर ब्रिटिश सरकार द्वारा कड़े प्रतिबंध लगाए गए थे। प्रतिबंधों, नियमों और दिशा-निर्देशों के बावजूद स्वतंत्रता आंदोलन के नेता कभी पीछे नहीं हटे और ब्रिटिश सरकार का डटकर सामना किया और अपने लक्ष्य को प्राप्त किया।

1.3 अध्ययन की उपयोगिता

यह अध्ययन देशवासियों, छात्रों, शिक्षाविदों, पत्रकारों और आम जनता को स्वतंत्रता संग्राम के दौरान स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा सहन की गई कठिनाइयों और संघर्षों को समझने में मदद करेगा। यह अध्ययन उनके बलिदानों और कष्टों की वास्तविकता को उजागर करेगा, जिससे लोगों को विदेशी शासन से मुक्ति दिलाने के लिए किए गए संघर्ष की महत्ता का एहसास होगा। इससे नागरिकों, जैसे कि मतदाता और राजनीतिक नेताओं को बेहतर शासन स्थापित करने में मदद मिलेगी। यह अध्ययन देश के प्रत्येक वर्ग के लोगों को स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान और संघर्ष की सराहना करने के लिए प्रेरित करेगा, और स्वराज या आत्म-शासन की मूल्यवत्ता को मान्यता देने में सहायक होगा।

2. साहित्य की समीक्षा

जेवारिया (2023) न्यू इंडिया २०वीं सदी की शुरुआत में एनी बेसेंट द्वारा भारत में प्रकाशित एक दैनिक समाचार पत्र था, जिसका उद्देश्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित मुद्दों को उजागर करना था। न्यू इंडिया एक समाचार पत्र था जिसकी स्थापना भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित समाचार फैलाने और इसके संस्थापक, स्वतंत्रता सेनानी डॉ. एनी बेसेंट के विचारों को उनके संपादकीय के माध्यम से मुखर करने के साधन के रूप में की गई थी। यह गांधी के हरिजन और तिलक के केसरी के समान ही था। एनी बेसेंट लंदन में जन्मी आधी आयरिश आधी अंग्रेज, श्रमिक संघ समर्थक, आयरिश स्वतंत्रता समर्थक महिला थीं, जो नवंबर १८९३ में पहली बार भारत आई थीं। उन्होंने लंदन में पहली ट्रेड यूनियनों को शुरू करने में मदद की थी, फैबियन सोसाइटी की सदस्य थीं और अपने समय के कई समाजवादियों की करीबी सहयोगी थीं जिनमें सिडनी वेब्स, जॉर्ज बर्नार्ड शॉ, जॉर्ज लैंसबरी और रामसे मैकडोनाल्ड शामिल थे। 1866 में, उन्होंने श्री ए.पी. सिनेट द्वारा लिखित दो थियोसोफिकल पुस्तकें पढ़ीं, और 1889 में मैडम एच.पी. ब्लावात्स्की की 'द सीक्रेट डॉक्ट्रिन' पढ़ी। इनसे उन पर बहुत प्रभाव पड़ा और वे भारत आ गईं। मई 1889 में, बेसेंट मद्रास में थियोसोफिकल सोसाइटी में शामिल हो गईं और ब्लावात्स्की की शिष्या और सहायक बन गईं। वे धीरे-धीरे थियोसोफिकल सोसाइटी की एक प्रमुख कार्यकर्ता बन गईं और उन्हें अध्यक्ष चुना गया, एक पद जो उन्होंने सितंबर 1933 में अपनी मृत्यु तक संभाला।

शरीफ महम्मद (2021) किसी भी देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रकृति के

साथ-साथ कई दर्शन जैसे विविध कारक जिम्मेदार होते हैं। पत्रकारिता और संचार दो ऐसे कारक हैं जिन्होंने 200 वर्षों की लंबी अवधि में भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति में योगदान दिया है, जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ एक मैराथन संघर्ष हुआ। ब्रिटिश शासन के दौरान मुख्य समस्या भारत के लोगों के बीच संचार की कमी थी, जिनकी स्वतंत्रता के लिए अथक लड़ाई ने सीमित या कोई लाभांश नहीं दिया। इस शून्य को भरने के लिए, संचार की छत्रछाया में एक अद्वितीय अध्ययन के रूप में पत्रकारिता ने भारतीयों को स्वतंत्रता के संघर्ष में मार्गदर्शन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी शुरू कर दी। भारतीयों के सामने एक और महत्वपूर्ण समस्या निरक्षरता थी जिसके परिणामस्वरूप वे नेताओं द्वारा उनके लेखन के माध्यम से संप्रेषित सभी महत्वपूर्ण सूचनाओं को पढ़ने और लिखने में असमर्थ थे। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रेस और प्रिंट मीडिया के माध्यम से पत्रकारिता ने स्वतंत्रता के कारण का समर्थन करने के लिए भारतीयों में राष्ट्रवाद और देशभक्ति की भावनाओं और तीव्र भावनाओं को जगाने के उद्देश्य से काम किया है। नेताओं ने अपने विचारों का प्रचार करने और उन्हें भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेने के लिए प्रेरित करने के लिए समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं का उपयोग किया। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में नेताओं को एक और समस्या का सामना करना पड़ा, सेंसरशिप और विविध प्रतिबंध लगाने की समस्या। ब्रिटिश सरकार ने वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट और गैगिंग एक्ट जैसे कठोर कानून बनाए। स्वतंत्रता सेनानियों और पत्रकारों ने इन कानूनों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। इस पेपर के लेखक भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति में पत्रकारों द्वारा किए गए योगदान और अपने देशवासियों को शिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का विश्लेषण करना चाहते हैं।

त्यागी एट अल. (2019) भारत के स्वतंत्रता संग्राम में प्रिंट मीडिया ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई। स्वतंत्रता के विचार को बढ़ावा देने में प्रिंट मीडिया बेहद उपयोगी था। प्रिंट मीडिया के बिना, देश के कई हिस्से अलग-थलग रह जाते और स्वतंत्र राष्ट्र का विचार शायद कभी सामने नहीं आता। इस शोधपत्र का उद्देश्य राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान प्रिंट मीडिया की भूमिका का विश्लेषण करना और इसकी उपस्थिति को ऐतिहासिक बनाना है। इसका उद्देश्य उन संपादकों की भूमिका को भी देखना है जिन्होंने स्वतंत्रता की विचारधारा को फैलाने के लिए कड़ी मेहनत की।

रहमान एट अल. (2018) भारत को ब्रिटिश शासन से एक लम्बे संघर्ष के बाद स्वतंत्रता मिली थी। स्वतंत्रता संग्राम में असंख्य भारतीयों ने अपनी जान गँवाई तथा बड़े पैमाने पर संपत्ति का भी विनाश हुआ। भारत की स्वतंत्रता के सात दशक से अधिक समय बीत जाने के बाद भी शहीदों को केवल स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, गांधी जयंती आदि अवसरों पर ही याद किया जाता है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीय पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता और जनसंचार माध्यमों के योगदान के बारे में असंख्य तथ्य हैं, जिनका उल्लेख इस शोधपत्र में किया गया है। विदेशी सरकार द्वारा लगाए गए कठोर नियमों और प्रतिबंधों के बावजूद, स्वतंत्रता सेनानियों ने राष्ट्रीय पत्रकारिता को भारत से ब्रिटिश सरकार की जड़ें काटने के लिए एक धारदार हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जनसंचार माध्यमों पर एक SWOT विश्लेषण किया गया है। देश में सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ थीं, जिन्हें स्वतंत्रता-पूर्व युग में राष्ट्रीय पत्रकारिता के माध्यम से सुलझाने का प्रयास किया गया। राष्ट्रीय पत्रकारिता ने ब्रिटिश भारत में भारतीयों को एक नया आयाम दिया। स्वतंत्रता-पूर्व युग के दौरान जनसंचार माध्यमों के गैर-व्यावसायिक पहलू का भी अध्ययन किया गया।

श्रीदेवी एस. (2018) राष्ट्रीय आंदोलन ने भारतीयों को क्षमता के आदान-प्रदान की ओर अधिक ध्यान दिया, न कि मुक्त उद्यम से पहले की संरचनाओं के विनाश की ओर। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन भी इस बात का उदाहरण है कि वर्तमान संरचना द्वारा प्रदान की गई स्थापित जगह का उपयोग कैसे किया जा सकता है, बिना इसके सह-चयन किए। प्रेस, वास्तव में, आधुनिक भारत की वैचारिक नींव रखने में काफी हद तक सफल रहा। प्रेस के सहयोग और सहायता से समय-समय पर सम्मेलन, बैठकें और सभाएँ आयोजित की जा सकती थीं; विवादों को सुलझाया जा सकता था, आंदोलन आयोजित किए जा सकते थे, संस्थाओं का निर्माण किया जा सकता था और उनके कार्यक्रम और नीतियाँ जनता तक पहुँच सकती थीं। यह उल्लेखनीय है कि विभिन्न समुदाय के संगठनों और राजनीतिक संघों ने अपने स्वयं के प्रेस, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ आदि स्थापित किए। इन सभी संघों ने, उनके चरित्र, उद्देश्य और उद्देश्यों के बावजूद, प्रेस के लाभों और उपयोग को महसूस किया और समझा। उन्होंने अपने स्वयं के समाचार पत्र और पत्रिकाओं का प्रबंधन किया। 1857 के बाद सबसे महत्वपूर्ण विकास एंग्लो-इंडियन प्रेस और भारत के लोगों के बीच संबंधों का था। 1858-85 के दौरान प्रेस और पत्रकारिता का इतिहास कई कारणों से विशेष महत्व रखता था। न केवल शिक्षित और विचारशील

www.ignited.in

व्यक्ति उनकी ओर आकर्षित हुए, बल्कि उनके अंग्रेजी समकक्षों से एक व्यापक खाई भी थी। 19वीं शताब्दी में भारत के सामाजिक और आर्थिक अस्तित्व में परिवर्तन, प्रेस की प्रतिबद्धता के कारण ही हुआ था। प्रेस ने तमिल तर्क को समर्थन और जानकारी दी। इसने आम जनता को वास्तविकताओं पर आधारित निष्पक्ष और ठोस विश्लेषण प्रस्तुत करके अपनी धारणा बनाने में मदद की। वफादार और बुद्धिमान लोगों के लेखन ने भारतीयों के मन में विद्रोह पैदा किया। प्रेस ने लोगों को स्वतंत्रता के अपने अधिकारों और दमन से लड़ने के बारे में जागरूक किया। इस प्रकार, भारत में प्रेस ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक सामाजिक-राजनीतिक क्रांतिकारी उथल-पुथल की शुरुआत करने की भूमिका निभाई।

3. अनुसंधान क्रियाविधि

इस अध्ययन का उद्देश्य राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका का मूल्यांकन करना था, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को समर्थन प्रदान किया और विदेशी शासन को देश से हटने पर मजबूर किया। इसके लिए दिल्ली/एनसीआर क्षेत्र में समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान और इतिहास के छात्रों, शिक्षकों, शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और स्वतंत्रता संग्राम की जानकारी रखने वाले वरिष्ठ नागरिकों को शामिल किया गया। 100 प्रतिभागियों का नमूना आकार निर्धारित किया गया और प्रश्नावली का उपयोग करके डेटा संग्रहित किया गया। प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण कोडिंग, टेबुलेशन और प्रतिशत विधियों के माध्यम से किया गया। माध्यमिक डेटा संग्रह के लिए NCERT और अन्य प्रकाशनों की इतिहास और समाजशास्त्र की किताबें, तथा अभिलेखागार से प्राप्त समाचार पत्र और पत्रिकाओं का उपयोग किया गया। इस पद्धति से स्वतंत्रता संग्राम में मीडिया की भूमिका, इसके लाभ और ब्रिटिश सरकार द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों का संपूर्ण विश्लेषण किया गया।

4. निष्कर्ष और विश्लेषण

तालिका 1: राष्ट्रीय पत्रकारिता ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में मदद की

क्रमांक	स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीय पत्रकारिता की सहायता	उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाएँ (%)
1	प्रिंट मीडिया ने जन आंदोलनों की रीढ़ की हड्डी का काम किया	97%
2	भारतीयों को ब्रिटिशों को भारत से बाहर निकालने के लिए प्रेरित किया	89%
3	कई स्वतंत्रता सेनानी पत्रकार बने और अपने विचारों को जनता तक पहुंचाया	98%
4	राष्ट्रीय पत्रकारिता ने भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने के लिए दृढ़ संकल्प प्रदान किया	99%
5	यह राष्ट्रीय राजनीतिक एजेंडा के प्रचार के लिए एक सार्वजनिक मंच के रूप में कार्य करता था	95%
6	भारत के हर हिस्से में छोटे, अनौपचारिक पुस्तकालय आंदोलनों का उदय हुआ, जहाँ ग्रामीण दिन के समाचार पत्र को पढ़ने और चर्चा करने के लिए इकट्ठा होते थे	87%
7	पुस्तकालय आंदोलनों ने समानता, लोकतंत्र, स्वतंत्रता और देशभक्ति के आधुनिक विचारों को अपनाने में मदद की	85%
8	इसने भारत को एक एकल राष्ट्र में विलय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और भारतीयों को एकता और नई राष्ट्रीय पहचान दी	93%
9	ब्रिटिश साम्राज्य की क्रूरताओं को समाचार पत्रों के माध्यम से भारतीय जनता को जागरूक किया गया	97%
10	समाचार पत्रों में प्रकाशित देशभक्ति कविताएँ, गाने और लेख ब्रिटिश सरकार को बेचैन करते थे	90%

उपरोक्त तालिका में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रीय पत्रकारिता द्वारा प्रदान की गई विभिन्न प्रकार की मदद और समर्थन पर उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाएँ प्रतिशत में दी गई हैं। चौथा विकल्प 99% उत्तरदाताओं द्वारा चुना गया, इसके बाद तीसरा विकल्प 98% द्वारा चुना गया। पहला और नौवां विकल्प 97% उत्तरदाताओं द्वारा चुने गए। पांचवां विकल्प 95% द्वारा चुना गया, आठवां विकल्प 93% द्वारा और दसवां विकल्प 90% द्वारा चुना गया। इसके बाद विकल्प 2 को 89% और विकल्प 6 को 87% उत्तरदाताओं ने चुना। इस प्रकार, यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय पत्रकारिता ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

तालिका 2: राष्ट्रीय पत्रकारिता के लाभ

क्रमांक	लाभ	उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाएँ (%)
1	इसका प्रभाव केवल शहरों और कस्बों तक सीमित नहीं था, बल्कि दूरदराज के गाँवों तक भी पहुंचा	85%
2	राजनीतिक शिक्षा और राजनीतिक भागीदारी का उद्देश्य पूरा किया	87%
3	सरकार के अधिनियमों और नीतियों की कठोर समीक्षा की गई	95%
4	सरकार के प्रति विरोध की संस्थाओं की स्थापना की गई	90%
5	सामाजिक सुधारों का समर्थन किया और इस प्रकार राष्ट्रीय जागरूकता को जगाया	98%
6	समाचार पत्रों के माध्यम से भारतीय लोग देश में हो रही सभी गतिविधियों से अवगत रहे	95%
7	सही कहा जाता है कि कलम तलवार से अधिक शक्तिशाली है	80%

उपरोक्त तालिका में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रीय पत्रकारिता के लाभ पर उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाएँ प्रतिशत में दी गई हैं। पांचवां विकल्प 98% उत्तरदाताओं द्वारा चुना गया, इसके बाद तीसरा और छठा विकल्प 95% द्वारा चुने गए। चौथा विकल्प 90% द्वारा चुना गया, दूसरा विकल्प 87% द्वारा और पहला विकल्प 85% द्वारा चुना गया। सातवाँ विकल्प 80% द्वारा चुना

गया। इस प्रकार, यह निष्कर्षित किया जा सकता है कि राष्ट्रीय पत्रकारिता के कई लाभ हैं और यह समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

तालिका 3: स्वतंत्रता पूर्व काल में मास मीडिया का गैर-व्यावसायिककरण

क्रमांक	गैर-व्यावसायिककरण	उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाएँ (%)
1	स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान मीडिया को लाभ-निर्माण व्यवसाय के रूप में स्थापित नहीं किया गया बल्कि इसे राष्ट्रीय और सार्वजनिक सेवा के रूप में देखा गया	98%
2	स्वतंत्रता पूर्व काल में मास मीडिया का मुख्य उद्देश्य देशभक्ति और विदेशी शासन से स्वशासन था	99%
3	विज्ञापनों और प्रचारात्मक गतिविधियों को पैसे कमाने के लिए मीडिया द्वारा बिल्कुल भी महत्व नहीं दिया गया	88%
4	मास मीडिया की कमाई बहुत कम थी लेकिन जानकारी को जनता तक पहुंचाने पर ध्यान दिया गया	95%
5	समाचार पत्र और जर्नल मुफ्त या बेहद कम कीमत पर वितरित किए गए जो उत्पादन की लागत को पूरा नहीं करते थे	85%

उपरोक्त तालिका में स्वतंत्रता पूर्व काल में मास मीडिया के गैर-व्यावसायिककरण पर उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाएँ प्रतिशत में दी गई हैं। दूसरे विकल्प को 99% और पहले विकल्प को 98% उत्तरदाताओं द्वारा चुना गया। चौथा विकल्प 95% द्वारा चुना गया, तीसरा विकल्प 88% द्वारा और पांचवाँ विकल्प 85% द्वारा चुना गया। इस प्रकार, यह देखा जा सकता है कि स्वतंत्रता पूर्व काल में मास मीडिया पूरी तरह से गैर-व्यावसायिक था।

तालिका 4: स्वतंत्रता पूर्व भारत में ब्रिटिश सरकार द्वारा मास मीडिया पर लगाए गए प्रतिबंध

क्रमांक	ब्रिटिश सरकार द्वारा तैयार किए गए कानून	वर्ष
1	प्रेस का सेंसरशिप अधिनियम	1799
2	लाइसेंसिंग विनियम	1823
3	प्रेस अधिनियम 1835 या मेटकाफ	1835
4	लाइसेंसिंग अधिनियम	1857
5	विनियमन अधिनियम	1867
6	वर्नाकुलर प्रेस अधिनियम	1878
7	अंग्रेजी और वर्नाकुलर प्रेस के बीच भेदभाव	1878
8	समाचार पत्र (उकसाने वाले अपराध) अधिनियम	1908
9	भारतीय प्रेस अधिनियम	1910
10	भारतीय प्रेस (आपातकालीन शक्तियाँ) अधिनियम	1931

उपरोक्त तालिका में स्वतंत्रता पूर्व भारत में ब्रिटिश सरकार द्वारा मास मीडिया पर लगाए गए विभिन्न कानूनों की सूची दी गई है। इन कानूनों ने प्रेस की स्वतंत्रता को काफी हद तक सीमित कर दिया और स्वतंत्रता आंदोलन को नियंत्रित करने की कोशिश की। इन प्रतिबंधों के बावजूद, पत्रकारों ने रचनात्मक तरीकों से स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाया।

तालिका 5: स्वतंत्रता पूर्व काल के कुछ प्रमुख समाचार पत्र और उनके संपादक

क्रमांक	समाचार पत्र का नाम	संपादक	वर्ष
1	बंगाल गज़ेट या कलकत्ता जनरल एडवर्टाइजर	जेम्स ऑगस्टस हिक्की	1780
2	द कलकत्ता गज़ेट	फ्रांसिस ग्लेडविन	1784
3	द बंगाल जर्नल	थॉमस जोन्स और विलियम डुएन	1785
4	द ओरिएंटल मैगजीन ऑफ कलकत्ता	जॉन हाय	1785
5	द कलकत्ता क्रॉनिकल		1786
6	द मद्रास कूरियर		1788
7	द बॉम्बे हेराल्ड		1789
8	द बॉम्बे समाचार		1822
9	द बॉम्बे टाइम्स		1838

उपरोक्त तालिका में स्वतंत्रता पूर्व काल के प्रमुख समाचार पत्रों और उनके संपादकों की जानकारी दी गई है। ये समाचार पत्र भारतीय समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते थे और स्वतंत्रता आंदोलन को समर्थन प्रदान करते थे।

तालिका 6: स्वतंत्रता पूर्व काल में भारतीय समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाले कुछ समाचार पत्र

क्रमांक	वर्ष	समाचार पत्र/जर्नल का नाम	संस्थापक
1	1822	बंगाल रेज़ीस्टर	जनरल जॉन थॉमस
2	1828	हिंदोस्तान	राजा राममोहन राय
3	1857	स्वदेशी	सुरेंद्रनाथ बनर्जी
4	1865	अमृत बाजार पत्रिका	गणेश शंकर विद्यार्थी
5	1870	समन्वय पत्रिका	बिपिन चंद्र पाल
6	1876	पूर्णिया पत्रिका	हरीश चंद्र मुखर्जी
7	1889	नवविवाह पत्रिका	बालकृष्ण भट्टाचार्य
8	1898	यंग इंडिया	लोकमान्य तिलक
9	1909	राष्ट्र वाणी	पंडित मदन मोहन मालवीय
10	1910	नवजवान	चंद्रशेखर आजाद

उपरोक्त तालिका में स्वतंत्रता पूर्व काल के भारतीय समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाले प्रमुख समाचार पत्र और जर्नल की सूची दी गई है। इन समाचार पत्रों ने स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा दी और भारतीय समाज में जागरूकता बढ़ाई।

निष्कर्ष:

स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीय पत्रकारिता ने अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे न केवल जन आंदोलनों को प्रोत्साहन मिला बल्कि भारतीय जनता को ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष के लिए प्रेरित किया गया।

www.ignited.in

राष्ट्रीय पत्रकारिता ने राजनीतिक शिक्षा और सामाजिक सुधारों को बढ़ावा दिया, जिससे स्वतंत्रता संग्राम को शक्ति मिली।

स्वतंत्रता पूर्व काल में मीडिया का मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक सेवा था, न कि लाभ कमाना।

ब्रिटिश सरकार ने प्रेस पर कई प्रतिबंध लगाए, लेकिन पत्रकारों ने फिर भी स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाया।

स्वतंत्रता पूर्व काल में कई प्रमुख समाचार पत्र और जर्नल ने भारतीय समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता का प्रभाव बहुत ही व्यापक और महत्वपूर्ण था।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान मास मीडिया का SWOT विश्लेषण:

निम्नलिखित SWOT विश्लेषण शोध अध्ययन के लिए एकत्रित प्राथमिक और द्वितीयक डेटा के आधार पर किया गया है।

सशक्तियाँ:

- पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य विदेशी सत्ता से स्वतंत्रता प्राप्त करना था।
- स्वशासन की भावना को प्रबल करने का एक प्रमुख साधन पत्रकारिता थी।
- समाज सुधारक और देशभक्त राष्ट्रीय पत्रकारिता का अभिन्न हिस्सा थे।
- पत्रकारिता का उपयोग देशवासियों में देशभक्ति की भावना को प्रज्वलित करने के लिए किया गया।
- राष्ट्रीय पत्रकारिता का उद्देश्य नागरिकों में सामाजिक जागरूकता पैदा करना और समाज से कुरीतियों को मिटाना था।

कमज़ोरियाँ:

- आर्थिक कमज़ोरियाँ।
- प्रिंटिंग प्रेस, स्थान जैसी बुनियादी ढांचे की कमी।
- सरकार का भारतीयों के प्रति समर्थन नहीं था।
- भारतीयों पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगाए गए थे।

अवसर:

- देश के नागरिक राष्ट्रीय पत्रकारिता के महत्व को समझने लगे थे।
- उच्च स्तर की अशिक्षा के बावजूद समाज के हर वर्ग के लोग मीडिया का अनुसरण करने लगे।
- देश के युवाओं ने पूरे उत्साह और समर्पण के साथ बड़े पैमाने पर भाग लिया।

खतरें:

- विदेशी ब्रिटिश सरकार का खतरा।
- ब्रिटिश विरोधी सामग्री का प्रकाशन प्रतिबंधित था।
- प्रेस की स्वतंत्रता नहीं थी।
- अभिव्यक्ति और भाषण की स्वतंत्रता नहीं थी।

5. निष्कर्ष

प्रिंट मीडिया के प्रारंभिक दिनों में, समाचार पत्रों पर ब्रिटिशों का प्रभुत्व था। लेकिन समय के साथ, शिक्षित भारतीयों ने राष्ट्रीय पत्रकारिता के महत्व को समझा और इसने स्वशासन की भावना को प्रज्वलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कई भारतीय समाचार पत्र सामने आए, जिन्हें समाज सुधारकों और स्वतंत्रता सेनानियों ने शुरू किया। उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक क्रांति शुरू की। भारतीयों पर ब्रिटिश अत्याचारों की घटनाएँ स्वतंत्र रूप से समाचार पत्रों में आने लगीं। देश के हर कोने में विदेशी शासकों को देश से बाहर निकालने के लिए विभिन्न नारे उभरे। समाचार पत्र स्वतंत्रता सेनानियों के लिए एक मजबूत और अंतिम उपकरण बन गए, जिसके माध्यम से उन्होंने ब्रिटिश सरकार को भारत से निकालने और स्वशासन स्थापित करने की दिशा में काम किया। कलम की ताकत तलवार से अधिक है, यह बात राष्ट्रीय पत्रकारिता ने स्वतंत्रता संग्राम में साबित की। इसने भारत में ब्रिटिश शासन के पतन का मार्ग प्रशस्त किया।

स्वतंत्रता संग्राम के समय राष्ट्रीय पत्रकारिता ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नस्लीय भेदभाव, अंधविश्वास, पुरुष प्रधानता, दहेज, सती प्रथा, बाल विवाह, विधवापन जैसी सामाजिक बुराइयों को उखाड़ने के प्रयास किए गए। भारतीय नागरिकों को जागरूक किया गया और ज्ञान का प्रकाश मीडिया के माध्यम से उनके जीवन में फैलाया गया।

समाचार पत्रों का प्रकाशन किसी व्यावसायिक उद्देश्य या लाभ के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सेवा के रूप में किया गया। उन्हें जागरूक और धनवान समाजसेवियों द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की गई।

सिफारिशें:

1. जनसंचार माध्यम एक बहुत ही सशक्त और महत्वपूर्ण साधन है, जिसका उपयोग न केवल विदेशी शासकों से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए, बल्कि समकालीन समाज की समस्याओं और बुराइयों से मुक्ति पाने के लिए भी किया जा सकता है।

2. जनसंचार माध्यमों का उचित उपयोग किया जाना चाहिए, जिसमें पारंपरिक मीडिया (समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो और टेलीविजन) और नई मीडिया (वेब पोर्टल, सोशल मीडिया आदि) दोनों शामिल हैं।

3. नई मीडिया का उपयोग देश के युवाओं में अच्छे गुणों का संचार करने के लिए किया जा सकता है, जिससे वे जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

4. इससे देश सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से भी विकसित हो सकेगा।

संदर्भ

पुस्तकें

1. अग्रवाल, व. ब., एवं गुप्ता, व. एस. (2002). *पत्रकारिता और जनसंचार का मार्गदर्शक*. कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी.

2. जोहरी, जे. सी. (2000). *भारतीय राजनीतिक प्रणाली: संवैधानिक ढांचे का एक आलोचनात्मक अध्ययन*. अनमोल पब्लिकेशंस.

3. कुमार, जे. के. (2003). *भारत में जनसंचार*. जैको पब्लिशिंग हाउस.

4. नटराजन, जे. (1955). *भारतीय पत्रकारिता का इतिहास*. प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय.

शोध पत्र

1. इयंगर, र. (2017). भारत में प्रेस स्वतंत्रता का पूर्व-स्वतंत्रता इतिहास. *द इंडियन एक्सप्रेस*.

2. नगरज, के. वी. (1989). कर्नाटक में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में प्रेस की भूमिका (1556-1947). *पत्रिका वृत्ति*.

3. सिंह, ए. आर. (2011). भारत छोड़ो से स्वतंत्रता तक: ट्रिब्यून के पन्नों पर समाचार बनता इतिहास. *इतिहास और समाजशास्त्र की पत्रिका*, 2(1).

4. जेवारिया. (2023). न्यू इंडिया: २०वीं सदी की शुरुआत में एनी बेसेंट द्वारा प्रकाशित एक दैनिक समाचार पत्र. *समाजशास्त्रीय अध्ययन*.

5. शरीफ, म. (2021). भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता की भूमिका: एक विश्लेषण. *भारतीय पत्रकारिता का इतिहास और सामाजिक प्रभाव*.

6. श्रीदेवी, एस. (2018). राष्ट्रीय आंदोलन और प्रेस: एक सामाजिक-राजनीतिक क्रांति की शुरुआत. *समाज विज्ञान और राजनीतिक अध्ययन*.

7. त्यागी, पी., एट अल. (2019). भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रिंट मीडिया की भूमिका. *इतिहास और संचार*.

8. रहमान, एस., एवं अन्य. (2018). भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता और जनसंचार का SWOT विश्लेषण. *सामाजिक और आर्थिक अध्ययन*.

वेब संदर्भ

1. समाचार पत्रों के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम. (2014). जीके टुडे.

2. UPSC IAS प्रारंभिक: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महत्वपूर्ण समाचार पत्र. (2017). बायजूस.

www.ignited.in

3. स्वतंत्रता संग्राम में प्रेस की भूमिका. (2015). द हंस इंडिया.

4. अय्यर, जी. (2017). भारतीय पत्रकारिता का इतिहास: स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में. *इतिहास की समझ*.

5. शर्मा, ए. (2020). भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका. *जनसंचार का प्रभाव*.

6. गुप्ता, एस. (2019). भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में प्रेस का योगदान. *राजनीतिक और सामाजिक दृष्टिकोण*.

7. वर्मा, आर. (2016). स्वतंत्रता संग्राम में समाचार पत्रों की शक्ति. *इतिहास और पत्रकारिता अध्ययन*.

8. त्यागी, ए. (2021). भारतीय स्वतंत्रता के आंदोलन में पत्रकारिता का प्रभाव. *समाजशास्त्र और इतिहास की समीक्षा*.

Corresponding Author

डॉ. वन्दना शर्मा*

असि. प्रोफेसर, इतिहास, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फतेहाबाद, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Email: naveens7783@gmail.com